उग्रवाद–भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन

डॉ. अजय कुमार सिंह

1885 ई0 में भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस की स्थापना हुई। इस दल ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व करना प्रारंभ किया। 1885 से 1905 तक कांग्रेस पर दादा भाई नॉरोजी, पीरोज शाह मेहता, दीनशा वाचा, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, वोमेश बनर्जी और गोपाल कृष्ण गोखले जैसे नेता का प्रभाव था। वे लोग उदारवादी और परिमित राजनीति और साधनों में विश्वास करते थे। इसी कारण उन्हें उदारवादी की संज्ञा दी गयी। ये नेता क्रमिक सुधार और अंग्रेजों से समन्वय करके स्वतंत्रता प्राप्त करने के पक्ष में थे। अतः उन्होंने संवैधानिक और शांतिपूर्ण तरीकों को अपनाने पर बल दिया। रानाडे ने इन्हें विचार दिया था कि उस वस्तु की अथवा उन आदेशों की झूठी आशा ही मत करो जो मिलनी असंभव है।

किन्तु बीसवीं सदी के प्रारंभ में कांग्रेस में एक नए तरूणदल का उदय हुआ जो उदारवादी नेताओं के उद्देश्यों और साधनों के आलोचक थे। वे तरूण लोग चाहते थे कि कांग्रेस का ध्येय स्वराज्य होना चाहिए जिसे वे आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता से प्राप्त कर सकें।